हिन्दी आलोचना का विकास

स्नातकोत्तर(हिन्दी)-द्वितीय सत्र के विद्यार्थियों हेतु
पाठ्यक्रम कोड-HIND 4005

अंजनी कुमार श्रीवास्तव
सह आचार्य, हिन्दी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
बिहार (मोतिहारी)

हिन्दी आलोचना का प्रादुर्भाव

- हिन्दी आलोचना का आरम्भ भारतेंदु युग से माना जाना चाहिए | हालांकि भक्तिकाल से ही लक्षण ग्रंथों की रचना प्रारम्भ हो गयी थी और रीतिकाल में बड़े पैमाने पर लक्षण ग्रन्थ लिखे भी गये, किन्तु वर्तमान आलोचना प्रणाली का आरम्भ भारतेंदु काल से ही मानना उचित है|
- भारतेंदु युगीन आलोचना की चार धाराएँ हैं –

1. पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पुस्तक समीक्षाएँ
2. लक्षण-ग्रन्थ परम्परा
3. वृत्त-संग्रहों में कवि परिचय सम्बन्धी लेखन
4. टीका पद्धति पर लिखी व्याख्यात्मक आलोचना

इनमें से प्रथम को ही आलोचना की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानना चाहिए, क्योंकि इन्हीं का विकास आगे चल कर हुआ|

हिन्दी की आरम्भिक आलोचना

- कृपाराम की 'हिततरंगिणी' हिन्दी काव्यशास्त्र की पहली पुस्तक है| किन्तु, इसे आलोचना का ग्रन्थ नहीं माना जा सकता |

- भारतेंदु के 'नाटक'(1883) निबन्ध से हिन्दी की सैद्धांतिक आलोचना का सूत्रपात माना जा सकता है |इसमें उन्होंने नाट्य सिद्धांत सम्बन्धी चिंतन प्रस्तुत किया है| उन्होंने युग-प्रवृत्ति के अनुरूप शास्त्रीय नियमों से छूट लेने की आवश्यकता पर विचार किया है|

- प्रेमघन ने सर्वप्रथम 'आनंद कादम्बिनी' में किसी सम्पूर्ण कृति को लेकर व्यावहारिक आलोचना प्रस्तुत की| उन्होंने लाला श्रीनिवासदास के नाटक 'संयोगिता स्वयंवर' की भी विस्तृत आलोचना की| उनके बाद बालकृष्ण भट्ट ने इस पुस्तक की आलोचना 'हिन्दी प्रदीप' में 'सच्ची समालोचना' नाम से की| बालकृष्ण भट्ट की समीक्षा अधिक परिपक्व है|

- यद्यपि भारतेंदु युग की आलोचना बहुत उल्लेखनीय नहीं है, किन्तु आलोचना-दृष्टि के विकास के सन्दर्भ में यह बहुत महत्वपूर्ण है|

हिन्दी आलोचना का निर्माण

- आचार्य विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार द्विवेदी युग हिन्दी आलोचना का निर्माण काल है|
- आलोचना की विविध पद्धतियाँ इसी युग में विकसित हुईं :

1. शास्त्रीय आलोचना– लाला भगवानदीन, जगन्नाथ प्रसाद 'भानू'

2. तुलनात्मक आलोचना—शिवनंदन सहाय, पद्म सिंह शर्मा, कृष्ण बिहारी मिश्र, लाला भगवानदीन|

   तुलनात्मक आलोचना इस युग की मूल प्रवृत्ति थी |

3. शोधपरक आलोचना – श्यामसुंदर दास, राधाकृष्ण दास, मिश्रबंधु, सुधाकर द्विवेदी
4. समीक्षापरक आलोचना –महावीर प्रसाद द्विवेदी, मिश्रबंधु, बालमुकुन्द गुप्त
5. वैचारिक आलोचना – महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल

द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना की उपलब्धियाँ

- संस्कृत समीक्षा सिद्धांतों का पुनराख्यान तथा पाश्चात्य समीक्षा के सिद्धांतों को भारतीय संस्कारों के अनुरूप ढालकर दोनों के समन्वित आधार पर शास्त्रीय समीक्षा सिद्धांत का निर्माण तथा उस आधार पर व्यावहारिक आलोचना |- रामचन्द्र तिवारी

- कृतियों के मूल्यांकन में सामाजिक मूल्यों को महत्त्व देने का विकास |
-रामचन्द्र तिवारी

- रीतिवाद पर वैज्ञानिकता और सामाजिकता को वरीयता| - विश्वनाथ त्रिपाठी

हिन्दी आलोचना का उत्कर्ष: आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

- 'रस और लोकमंगल' के आधार पर आलोचना के नये मानदंड का निर्माण
- रस को आध्यात्मिक भूमि से उतार कर उसकी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक व्याख्या
- अनुसन्धान और आलोचना का ऐक्य
- सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना में पूर्ण संगति
- प्रत्येक रचनाकार की व्याख्या के लिए अलग-अलग किन्तु उपयुक्त शब्द या शब्द समूह का चयन|

शुक्लेतर आलोचना

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के समानान्तर छायावादी कवियों- प्रसाद, निराला, महादेवी और पन्त ने भी आलोचनात्मक लेखन किया| इन्होंने भाषा की कोमलता, सौन्दर्यप्रियता और अभिव्यक्ति की लाक्षणिकता आदि पर ही विशेष विचार किया, किन्तु पन्त के 'पल्लव' की भूमिका, निराला की पुस्तक 'पन्त और पल्लव' तथा प्रसाद के 'रहस्यवाद' निबंध को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है| इन आलोचकों ने अनेक स्थानों पर शुक्ल जी से असहमति प्रकट की है |

- छायावादी कवियों की आलोचना के समानांतर छायावादी कविता के बारे में अत्यंत सहृदयता से कविता की आलोचना को मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया| इसे प्रभाववादी आलोचना कहा गया | शांतिप्रिय द्विवेदी इसी प्रकार के आलोचक हैं |

शुक्लोत्तर आलोचना

- शुक्लोत्तर आलोचना में मूलतः दो प्रकार के आलोचकों के नाम लिये जा सकते हैं–शुक्लानुवर्ती और आलोचना की बृहत् त्रयी |

- शुक्लानुवर्ती आलोचक- पं कृपाशंकर शुक्ल, पं विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, जगन्नाथ शर्मा आदि| इन्होंने रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना पद्धति के आधार पर कृतियों की आलोचना की|

- बृहत् त्रयी के आलोचक – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ. नगेन्द्र| ये शुक्लोत्तर आलोचना की बृहतत्रयी हैं| इन्होंने शुक्लजी के सिद्धांतों का यथास्थान विरोध करते हुए आलोचना के कछ नये मानदंड स्थापित किये|

- शुक्लोत्तर आलोचना में पीताम्बरदत्त बडत्थ्वाल तथा परशुराम चतुर्वेदी जैसे अनुसंधानकर्ताओं का नाम भी लिया जाना चाहिए| इन दोनों विद्वानों का क्षेत्र भक्ति साहित्य है|

हिन्दी आलोचना की बृहत् त्रयी

- आचार्य नंददुलारे वाजपेयी को सौंदर्यवादी आलोचक कहा जाता है| इन्होंने मूलतः कवि की अंतर्वृत्तियों और कलात्मक सौष्ठव के आधार पर आलोचना की है| छायावाद के सम्बन्ध में इनकी मान्यताओं का विशेष महत्त्व है|

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आ. रामचन्द्र शुक्ल की स्थापनाओं को चुनौती देते हुए कुछ महत्त्वपूर्ण सरणियाँ स्थापित की हैं| 'लोक और शास्त्र का द्वंद्व' इनकी आलोचना का केन्द्रीय तत्त्व है| इन्होंने अधिकतर सांस्कृतिक निरन्तरता के आलोक में साहित्य का विवेचन किया है|

- डॉ. नगेन्द्र रस सिद्धांत के आधुनिक व्याख्याता हैं| यही सिद्धांत उनकी आलोचना का केन्द्रीय तत्व है| किन्तु, इन पर अंग्रेजी साहित्य की मान्यताओं, मनोविज्ञान के आचार्यों, रीति-कवियों, छायावादी रोमांटिक भावबोध सबका प्रभाव है| रस, सौन्दर्य और आनंद की आत्मनिष्ठ स्थिति को ये महत्त्व देने वाले आचार्य हैं |

मार्क्सवादी आलोचना

- आलोचना की बृहत् त्रयी के पश्चात् आलोचना की सबसे प्रबल धारा मार्क्सवादी आलोचना हो गयी| यह मार्क्स और लेनिन की विचारधारा तथा उनके कला और साहित्य सम्बन्धी चिंतन को आधार बनाकर आलोचना करती है| अब तक की आलोचना में किसी सुनियोजित तन्त्र का अभाव था| मार्क्सवादी आलोचना ने विचारधारा के आधार पर एक सुनियोजित तन्त्र का निर्माण किया जिसने आलोचना की बाकी दृष्टियों पर वर्चस्व स्थापित कर लिया|

- शिवदान सिंह चौहान ने 1937 में विशाल भारत में एक लेख लिखा- 'भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता'| यहाँ से मार्क्सवादी आलोचना का प्रारम्भ माना जा सकता है|

- आरंभिक मार्क्सवादी आलोचना अत्यंत सरलीकृत और संकीर्ण है| इसने भारत के प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य की भर्त्सना में ही अधिक रुचि ली|

- मार्क्सवादी आलोचना में रामविलास शर्मा और नामवर सिंह के आगमन से एक युगांतर उपस्थित हुआ|

रामविलास शर्मा, नामवर सिंह और परवर्ती मार्क्सवादी आलोचना

- रामविलास शर्मा मार्क्सवादी धारा के सबसे समर्थ आलोचक हैं| उन्होंने भारतीय सन्दर्भ में मार्क्सवाद को स्थापित किया| मार्क्सवादी संकीर्ण धारा को प्रशस्त पथ प्रदान करने में रामविलास शर्मा का महत्त्वपूर्ण योगदान है| संस्कृत साहित्य और प्राचीन तथा मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के मूल्यांकन में उन्होंने मार्क्सवादी गलतियों का परिहार किया| रामचन्द्र शुक्ल की विरासत का भी उन्होंने मूल्यांकन किया जिसका अस्वीकार मार्क्सवादी आलोचना द्वारा हो रहा था| लोकजागरण और नवजागरण जैसी बहुत-सी अवधारणाओं का न केवल उन्होंने निर्माण किया, बल्कि अपने समसामयिक साहित्य का भी उचित मूल्यांकन किया|
- नामवर सिंह ने मार्क्सवादी आलोचना को एक वैचारिक आन्दोलन के रूप में ही अधिक देखा| उन्होंने अपने समसामयिक साहित्य पर अधिक लिखा और अपनी प्रतिभा के जोर से छायावाद, नई कहानी, नई कविता आदि के सम्बन्ध में अपनी धारणाओं को स्थापित किया | आलोचना की दूसरी परम्परा की स्थापना के लिए उन्होंने सतत् प्रयास किया, किन्तु असफल रहे|

...

- रामविलास शर्मा के समानांतर विशेषतौर पर कविता की आलोचना में कवि मुक्तिबोध भी प्रवृत्त हुए| मुक्तिबोध और रामविलास शर्मा में एक वैचारिक टकराहट बनी रही| नामवर सिंह ने मुक्तिबोध को केंद्र में लेकर कविता की धारणाओं का निर्माण किया|

- रामविलास शर्मा और नामवर सिंह के बाद मार्क्सवादी आलोचना को जे एन यू स्कूल ने विकसित किया| पुरुषोत्तम अग्रवाल, मैनेजर पाण्डेय और वीर भारत तलवार वर्तमान समय के सर्वाधिक समर्थ मार्क्सवादी आलोचक हैं |

- जे एन यू के बाहर बच्चन सिंह, विश्वनाथ त्रिपाठी और शिवकुमार मिश्र ने भी मार्क्सवादी आलोचना की दृष्टि से महत्त्पूर्ण कार्य किया है|

'परिमल' की आलोचना

- परिमल की स्थापना 1944 में प्रयागराज में हुई| इससे मूलतः रचनाकार जुड़े थे, किन्तु इसने हिन्दी जगत को कुछ महत्त्वपूर्ण आलोचक भी दिये| इनमें दो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं – विजयदेव नारायण साही और रामस्वरूप चतुर्वेदी|

- विजयदेव नारायण साही मुख्यतः कविता के आलोचक हैं| मार्क्सवादी आलोचना की जड़ता के विरुद्ध इन्होंने अपनी आलोचना को स्थापित किया| जायसी को इन्होंने कुजात सूफी के रूप में स्थापित किया जिसका विशेष मान आलोचना जगत में है| समकालीन रचनाशीलता पर लेखन के लिए भी इनका महत्त्व है|

- रामस्वरूप चतुर्वेदी विचारधारा के स्थान पर काव्यभाषा के उपकरण से आलोचना करने वाले आचार्य हैं| चूँकि, काव्यभाषा विचार और अनुभूति दोनों का संगुंफन है इसलिए वे वैचारिक आग्रह को महत्वपूर्ण न मानते हुए काव्यभाषा पर बल देते हैं| हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन में भी उन्होंने अपने काव्यभाषा के उपकरण का आदि से अंत तक निर्वाह किया है| अपने समसामयिक साहित्य और नवलेखन का भी उन्होंने सम्यक् मूल्यांकन किया है| मार्क्सवादी आलोचना के वैचारिक आग्रह और यूरोपीय सांस्कृतिक साम्राज्वाद से बचते हुए साहित्य की साहित्यिकता के पहचान के लिए रामस्वरूप चतुर्वेदी महत्त्वपूर्ण हैं |

- अज्ञेय मूलतः कवि हैं| परिमल की गोष्ठियों में भी वे जाते रहे हैं| एक कवि के रूप में कविता की रचना प्रक्रिया, काव्य सर्जना आदि पर आलोचनात्मक टिप्पणियों के लिए वे महत्वपूर्ण हैं|

सांस्कृतिक आलोचना

- राष्ट्र, संस्कृति और सांस्कृतिक जीवन-मूल्य को लेकर चलने वाली धारा वर्तमान आलोचना में महत्त्वपूर्ण होती जा रही है| इस धारा को सांस्कृतिक आलोचना कहना समीचीन है| वर्तमान युग की आलोचना का यह प्रबल स्वर है| आज इस धारा में दो महत्त्वपूर्ण आलोचक दिखाई पड़ते हैं – कमल किशोर गोयनका और नन्द किशोर पाण्डेय|

- कमल किशोर गोयनका मूलतः प्रेमचन्द साहित्य के आलोचक हैं| उन्होंने प्रेमचन्द के अप्राप्य साहित्य की खोज की है तथा प्रेमचन्द के सम्बन्ध में निर्मित अनेक भ्रांतियों का निराकरण किया है|

- नन्द किशोर पाण्डेय मूलतः भक्ति साहित्य के आलोचक हैं| विभिन्न बोलियों -भाषाओं के कोश के निर्माण में भी उनका अप्रतिम महत्त्व है| हिन्दी अनुशीलन के सम्पादक के रूप में सांस्कृतिक आलोचना को विकसित करने में भी उनका योगदान महत्त्वपूर्ण है|

आलोचना का वर्तमान परिदृश्य

- आज सांस्कृतिक आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना, दलित आलोचना, स्त्री आलोचना के अतिरिक्त उत्तर आधुनिक आलोचना भी लिखी जा रही है| दलित आलोचना की दृष्टि से बजरंग बिहारी तिवारी तथा स्त्री आलोचना की दृष्टि से अर्चना वर्मा(दिवंगत) महत्वपूर्ण हैं | उत्तर आधुनिक आलोचना की दृष्टि से सुधीश पचौरी और देवेन्द्र इस्सर का नाम लिया जा सकता है| आज बहुत से स्थापित और युवा आलोचक भी आलोचना में सक्रिय हैं| किन्तु, वर्तमान समय में कोई बड़े कद का आलोचक नहीं है|

- आज विदेशों में भी आलोचना लिखी जा रही है| भारत के बाहर स्थित भारतीय तथा विदेशी विद्वान् काफी अच्छा लिख रहे हैं| वसुधा डालमिया, फ्रेंचेस्का ओरसीनी आदि आधुनिक साहित्य पर तथा डेविड लौरेंजन, जे. एस. हॉली मध्यकालीन साहित्य के लिए उल्लेखनीय हैं| किन्तु, इनका लेखन अंग्रेजी या अन्य भाषाओं में है| हिन्दी का लोकवृत्त जैसी अनेक धारणाएँ इनके माध्यम से हिन्दी जगत में आयी हैं|

धन्यवाद !